रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

भारतीय परंपरा के हिसाब से तैयार करें युवा पीढ़ी–प्रो. कपिल देव मिश्र

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ

जबलपुर 30 अप्रैल। भारतीय जीवन परंपरा में राजसत्ता और लोकसत्ता दो पहिये हैं। लोकसत्ता में ही राजसत्ता समाहित है। भारतीय ज्ञान परंपरा में पुरातन और सनातनकाल में सब कुछ धर्मसत्ता से चलता था। भारतीय परंपरा में धर्मसत्ता सर्वोच्च है। पश्चिमी देश बाजार की बात करते हैं, हम परिवार की बात करते हैं। वो कहते हैं व्यापार की दृष्टि से सत्यनिष्ठा एक सर्वश्रेष्ठ नीति है। हम कहते हैं सत्यनिष्ठा एक सिद्धांत है। सिद्धांत कभी बदलता नहीं है। इसी दिशा में हमें भारत को आगे ले जाना है। इसी भारतीय परंपरा के हिसाब से युवा पीढ़ी को तैयार करना है। ये बातें रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय प्रो. कपिल देव मिश्र ने पं. कुंजीलाल दुबे प्रेक्षागृह में आयोजित दो दिनी राष्ट्रीय कार्यशाला के शुभारंभ अवसर पर अध्यक्ष की आसंदी से कही।

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान व सीपीआरजी नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 'नई शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान प्रणाली के आलोक में राजनीति विज्ञान की शिक्षा की स्थिति पर चर्चा' विषय पर विश्वविद्यालय में आयोजित कार्याशाला में कुलपति प्रो. मिश्र ने कहा कि राजनीतिशास्त्र कर्तव्यबोध कराता है। जितने सदगुण हैं सभी राजनीति से ओतप्रोत हैं। भारत सिद्धांतों का उद्भावक रहा है। यह भारत की आत्मा है, लेकिन काल के प्रवाह में अनेकों बातें दबा दी गईं। अब भारतीय ज्ञान परंपरा को विश्व क्षितिज पर पहुंचाने के लिए केंद्र, राज्य सरकार, सामाजिक व शैक्षणिक संस्थाएं सभी मिलकर ऐसा महामानव तैयार करें जो विश्व का नेतृत्व तो करे आध्यात्मिकता के चरमोत्कर्ष की अनुभूति भी कर चुका हो।

कार्यशाला में मुख्य वक्ता प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी कुलपति इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक ने कहा कि पहली बार देश में समग्र शिक्षा नीति बनी है जिसमें सभी परंपराओं को समाहित किया गया है। राजनीति एक सतत गतिविधि है जिसमें हम सभी पहलुओं का नियोजन करते हैं। राजनीति के सभी पहलुओं को नए सिरे से नई पुस्तकों में शामिल करने की जरूरत है। पाठ्यपुस्तकों में पुरातन व्यवस्था की जानकारी होनी चाहिए। भारतीय संस्कृति, ज्ञान, परंपरा को पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या में समाहित करने की आवश्यकता है।

मुख्य अतिथि प्रो. नरेंद्र कुमार तनेजा, पूर्व कुलपति, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ एवं राष्ट्रीय मंत्री, विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा एवं शोध व्यवस्था को उत्कृष्ट करने का प्रयास है। वर्तमान पाठ्यक्रम को भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ जोड़ा जाना जरूरी है।

विशिष्ट अतिथि प्रो. सुषमा यादव, सदस्य, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली ने कहा कि एनसीईआरटी की पुस्तकें पहले विशेष उद्देश्य से लिखी गई थीं। नई शिक्षा नीति यह अवसर दे रही है कि अर्थतंत्र के परिप्रेक्ष्य में भारत की संकल्पना को साकार करने की दिशा में काम किया जाए। सबसे अच्छा मिले, पर्याप्त मिले, ऐसी व्यवस्था बनाने की जरूरत है। जरूरी हो गया है कि राजनीति को सही परिप्रेक्ष्य में समझा जाए।

श्री रामानंद, निदेशक, सी.पी.आर.जी. ने कहा कि पाठ्यपुस्तकों को लेकर चर्चा का समय आ गया है। नई शिक्षा नीति आने के बाद विद्यार्थी भारतीय पुरातन व्यवस्था, ज्ञान परंपरा के बारे में कैसे आसानी से पढ़ सकें इस बारे में मंथन करने की जरूरत है।

कार्यक्रम का संचालन डा. शशिरंजन अकेला क्षेत्रीय संयोजक वि.भा.उ.शि.सं एवं आभार प्रदर्शन प्रो. राम शंकर संकायाध्यक्ष समाज विज्ञान रा.दु.वि.वि. ने किया। इस दौरान डा. बृजेश सिंह कुलसचिव, रादुविवि, डा. आशीष मिश्रा, संयोजक, वि.भा.उ.शि.सं, प्रो. संजीव शर्मा, प्रो. अश्विनी कुमार महापात्रा, नई दिल्ली, प्रो. अशोक आचार्य, नई दिल्ली, डॉ. वंदना मिश्रा, नई दिल्ली, प्रो. शीला राय, प्रो. पवन शर्मा, प्रो. घनश्याम शर्मा, प्रो. कमलेश मिश्र समेत बड़ी संख्या में शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।